Indian Streams Research Journal
ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

बुन्देलखण्डी लोकसंगीत में लोकवाद्यों की भूमिका

डॉ. एकता डेंगरे

प्रस्तावना

बुन्देलखण्ड का लोकजीवन सादगी का पर्याय है एवं लोकसंगीत सहज एवं प्राकृतिक है। लोकसंगीत, लोकनृत्य अपने मूल रूवरूप में सामाजिक होते है। जिसमें पूरा गॉव या पूरी जाति समुदाय में भाग लेता है। भारत में आज भी गॉवों में कुऐं से पानी खींचते समय, चक्की चलाते समय, खेतों में हल चलाते समय, वर्षा काल में भीगी-भीगी माटी की भीनी-भीनी सुगंध और वसंत ऋतु में सरसों के पीले-पीले खेतों को देखकर मन जब खुशी से झूम उठता है, तब लोकसंगीत का जन्म होता है। लोकसंगीत में लय व धुन की प्रधानता होती है शास्त्रीयता का कोई बंधन नहीं होता है। बुन्देलखण्ड की संस्कृति यहां के लोकजीवन में लोकगीतों, लोकवाद्यों तथा लोकनृत्यों के

माध्यम से सहजता से देखी जा सकती है। लोकवाद्यों का प्रयोग न केवल संगीत के साथ संगत करने में बल्कि स्वतंत्र वादन में भी किया जाता है। लोकरंजन हेतु संगीत की स्वर लहरी की गूँज तथा उसके साथ संगत हेतु जो वाद्य यंत्र प्रयुक्त होते है। वे बहुत ही सादे आडम्बर रहित साधारण उपयोग की वस्तुओं से निर्मित होते है। लोकसंगीत में लोकमानस की एक-एक रूपरेखा, सुख-दुख, हास-परिहास, विजय-पराजय मिलना-बिछु डना जैसे भाव आसानी से दर्शित होते है तथा बुन्देलखण्डी की संस्कृति के आधारभूत यहां के रहन-सहन, रीति-रिवाज, तीज-त्योहार, वृत्त-पूजन और शिल्पकला, स्थापत्यकला तथा ललितकलाओं आदि का दिव्य दर्शन इस आधुनिक युग में भी बुन्देलखण्ड के प्रत्येक क्षेत्र में देखने को मिलता है।

बुन्देलखण्ड अपने लोकगीतों, लोकवाद्यों तथा लोकनृत्यों के लिये प्रसिद्ध है। यहॉ के लोकगीतों, लोकनृत्यों में संगत देने तथा स्वतंत्र रूप से वादन के लिये लोकवाद्यों का प्रयोग किया जाता है। इसके साथ हमारे क्रिया वाद्य भी लोकवाद्यों का कार्य करते है जैसे ,सूप- ,चिमटा ,चक्की मूसर ,खल ,चूडियां आदि। लोकगायक ,रों को सम बनानेस्व यता से गीतों को तन्म ,गानेगायन के बीच सांस भरने (भराव) तथा श्रोताओं को करने के मंत्रमुग्ध लिए लोकवाद्यों का उपयोग करते है। लोकवाद्यों को भी भारतीय सांगीतिक वाद्यों के समान चार वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है।

.1 वादतन्तुय ,सारंगी- ,इकतारा ,रातम्बू डुगडुगीकेंकड़िया , आदि।

2. अवनद्य वाद्य – ढोलक, ढपली, ढोल, डमरू, ढप, नगाडा आदि।

3. घनवाद्य – झांझ, मंजीरा, करताल,

घुंघरू, चिमटा आदि
4. सुषिर वाद्य – शहनाई, बीन, शंख, रमतूला आदि।

जहाँ लोकवाद्य, लोकगीत एवं लोकनृत्य का समावेश हो उसे लोकसंगीत कहते है। अलग-अलग प्रांतों के अनुसार तथा अवसरों के अनुसार लावणी, दादरा, लोक-भजन, चैती आदि-आदि गीत प्रकारों तथा चंगेर नृत्य, सैश नृत्य, दिवारी नृत्य, राई नृत्य, ढिमरियाई नृत्य, जवारा आदि की रचना की जाती है। भिन्न-भिन्न लोक नृत्य में भिन्न-भिन्न लोकवाद्यों जैसे-चंगेर नृत्य के साथ ढ□ला, तुरही, सैरा नृत्य के साथ ढोलक, मंजीरा, राई, ढिमरियाई नृत्य के साथ मृदंग आदि को बजाया जाता है। गीतप्रकारों के साथ संगत करने में लघु तालों या निश्चित छोटी-छोटी मात्रा के बोल समूह का वादन होता है। ऐसे वादन में तालों के शास्त्रीय नियमों का □ालन आवश्यक नहीं होता है बल्कि गीत के वजन के अनुसार वाद्य की बजौटी होती है।

आज लोकवाद्य उ□क्षनीय एवं नगण्यता की श्रेणी में आ चुके है फिर भी ग्रामीण □रिवेश से आज भी जुडे हुये है जो विभिन्न □र्वों, उत्सवों एवं त्योहारों □र दिखलाई □डते है। लोकसंगीत की सहजता और उसका सौन्दर्य किसी से छि□ा नहीं है। भिन्न-भिन्न अवसरों □र भिन्न-भिन्न अभिव्यक्तियों के लिये लोककला, लोकसंगीत एवं लोकविधाओं में विभिन्न वाद्य यंत्रों की अ□नी विशिष्ट भूमिका है। यह सभी वाद्य हमारी ऐसी धरोहर है जिसमें समाज की भावनायें अभिव्यक्त होती है।